मेरा परिप्रेक्ष्य



एन. आर. प्रदीप
पेशेवर कलाकार और
ओकट्री इण्टरनैशनल स्कूल, कोलकाता में
दृश्य कला शिक्षक
ई–मेल: pradeepnr@gmail.com

कला में रुचि जगा पाने की मेरी खास, अलहदा विशेषता और पहचान इस सरल–साधारण समझदारी पर टिकी है कि आपके भीतर उतनी ही अच्छी कला है जितनी कि आपके आसपास। मेरा तरीका विद्यार्थी में कला की प्रक्रिया के मूल्यों और नैतिकता की समझ बनाने का, उनके लिए आदर उत्पन्न करने का तथा उनका अनुभव करवाने का और इस सम्पूर्ण प्रक्रिया को एक उत्पाद के रूप तक ले जाने का है। कच्ची उम्र के बच्चों के साथ कला की शुरुआत का सबसे बेहतर तरीका रेत से चीजें बनाने की कला या आसपास पड़े कबाड़ से कोलाज बनाने का है। मैंने पाया है कि इस गतिविधि के माध्यम से कला में दिलचस्पी लेने वाले छोटी उम्र के विद्यार्थियों के मन–मस्तिष्क पर जबरदस्त सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अपने आसपास मौजूद चीजों का प्रयोग करते हुए, नवाचार और रचनात्मक अभिव्यक्ति करने में वे बहुत उमंग में रहते हैं। इससे उन्हें अपनी रचनात्मकता में बेहतरी लाने में मदद मिलती है और उनमें यह एहसास भी जागता है कि कला की अभिव्यक्ति के लिए किन्हीं विशेष साधनों का होना जरूरी नहीं है।

एक और महत्त्वपूर्ण पक्ष है उन्हें आजादी देने का। कला को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के बिना परिभाषित नहीं किया जा सकता। मैं एक कलाकार के मन को दिशा देना पसन्द करता हूँ न कि उसके विचारों के प्रवाह को सीमा में बाँधना और उसके लिए कोई क्षितिज–रेखा तय करना। मैं विभिन्न माध्यमों और शैलियों में सीखने–सिखाने को प्रोत्साहित करता हूँ। यह प्रोत्साहन भी देता हूँ कि प्रत्येक विद्यार्थी मेरे किसी पूर्वाग्रह से प्रभावित हुए बिना सीखते, समझते, अभ्यास करते हुए अपनी व्यक्तिगत शैली और पहचान बना पाए। अभ्यास व्यक्तिगत स्तर पर तो होता ही है, सामूहिक स्तर पर भी करवाया जाता है ताकि सहयोगी भावना से काम करना और विचारों का आदान–प्रदान भी हो पाए।

मुझे इस बात का गर्व है कि मेरी छात्रा, दक्षिणी कोरिया की किम जिन मू ने कला को एक पेशे के तौर पर चुना है।

कला आपको अवलोकन, चिन्तन, विचार करना, खोजना, रचना और किसी मुद्दे पर विचार व्यक्त करना सिखाती है। इससे युवा मन इस रूप में विकसित होता है कि वह अपने व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में तकनीकी, विश्लेषणात्मक और मानसिक चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहेगा। ये गुण जीवन या पेशे के किसी भी क्षेत्र में आवश्यक हैं। इस सबके चलते कला में शिक्षित लोगों के लिए सीखना आसान और रुचिकर हो जाता है। कला आपको चीजों को एक अलग ढंग से देखना भी सिखाती है और अपनी सोच को नए आयाम देना भी। इससे समस्याओं को रचनात्मक तरीके से समझने और उनसे निपटने में मदद मिलती है – और यह गुण हर किसी के जीवन के लिए जरूरी है। मेरे विचार से कला को पाठ्यचर्या में एक गम्भीर विषय के रूप में शामिल किया जाना चाहिए ताकि विद्यार्थी कल के बेहतर इन्सान बन पाएँ।

अनुवादः रमणीक मोहन